



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१०१ अक्टूबर	१४.१२.२२	२	३-६

विकसित बेर से गुठली निकालने के यंत्र को मिला पेटेंट अब बच्चों और बुजुर्गों को खाने में नहीं होगी दिक्कत

बेर शुष्क क्षेत्र के फलों का राजा, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर है फल : प्रो. काम्बोज

भारत न्यूज़ | हिसार



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राच्यापक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेन्द्र सिंह गोदारा के सहयोग से विकसित किए गए इस यन्त्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट अनुदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कल्पित प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बेर जिसको शुष्क क्षेत्र के फलों का राजा व गरीब का फल भी कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से उचित मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं। परन्तु इस फल में गुठली

होने की वजह से हम इसको छोटे बच्चों, बुजुर्गों व आमजन को देने में परहेज करते हैं। बच्चों में इसकी गुठली के खाने की नली में फेसने का भय बना रहता है एवं बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दात दृटने का खतरा रहता है। गुठली को मुँह से निकालकर बार-बार फेकना भी एक समस्या है। उन्होंने कहा बेर की गुठली निकालने के बाद बच्चों को इसे बिना भय के खाने को दिया जा सकता है और बुजुर्ग भी इसको आसानी से खा सकेंगे।

विवि को मिल चुके हैं 20 पेटेंट कुलपति ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर अब तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विवि को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशट और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

प्रसंस्करण के लिए बहुत उपयुक्त है यन्त्र

विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा गुठली निकालने के बाद प्रसंस्करण के लिए बेर का गुदा भी आसानी से बनाया जा सकता है जो विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के काम आ सकता है। इसकी कैंडी व मुख्या बनाने के लिए फल में छेद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती जिससे इसकी अच्छी गुणवत्ता के साथ बढ़िया पैकेजिंग व परिवहन भी आसानी से किया जा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्मेलन पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ट्रैनिंग कार्यालय	18-12-22	५	१-४

बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को मिला पेटेंट

जागरण संवाददाता, हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राच्छापक डा. मुकेश कुमार द्वारा डा. देवी सिंह व डा. राजेन्द्र सिंह गोदारा के सहयोग से विकसित किए गए इस यंत्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए पेटेंट अनुदात किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बेर जिसको शुष्क क्षेत्र के फलों का गणना व गरीब का फल भी कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से उचित मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं जिससे लोगों में कुपोषणता की



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ डा. मुकेश कुमार व अन्य अधिकारी। पीआरओ

विश्वविद्यालय को मिल चुके हैं 20 पेटेंट

कुलपति ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विवि में विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर आवश्यक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 4 डिजाइन पेटेंट, 11 कार्पोरेइट व एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

समस्या कम होगी। परन्तु इस फल में

बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दांत दूने गुठली होने की वजह से हम इसको खाते समय बेर की गुठली के साथ छोटे बच्चों, बुजुर्गों व आमजन को देने में परहेज करते हैं। बच्चों ये इसकी गुठली के खाने की नली में इसकी गुठली के खाने की नली में फसने का भय बना रहता है एवं

बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दांत दूने का खतरा रहता है। इनके अतिरिक्त खाते समय बेर की गुठली के साथ इसका गुदा भी चिपका रह जाता है जिससे इसमें उपस्थित पोषक तत्व बेकार चले जाते हैं। गुठली की मुँह

प्रसंसकरण के लिए बहुत उपयुक्त है यंत्र

विवि के अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने कहा गुठली निकालने के बाद प्रसंसकरण के लिए बेर का गुदा भी आसानी से बनाया जा सकता है जो विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के काम आ सकता है। इसके साथ ही इसकी केंडी व मुरब्बा बनाने के लिए छल में छेद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती जिससे इसकी अचूक गुणवत्ता के सब्द-साथ बढ़िया पैकिंग व परिवहन भी आसानी से किया जा सकता है।

से निकालकर बार-बार फेंकना भी एक समस्या है। उन्होंने कहा बेर की गुठली निकालने के बाद बच्चों को इसे खिलाने भव्य के खाने की दिया जा सकता है और बुजुर्ग भी इसको आसानी से खा सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब कृषि अनुसंधान संस्थाएँ	१४.१२.२२	५	३-५

हकूमि में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने वाले यन्त्र को मिला पेटेंट

विश्वविद्यालय तो अब तक
मिल चुके हैं 20 पेटेंट

हिसार, 17 दिसम्बर (गढ़ी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत महायक प्राध्यायक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेन्द्र सिंह गोदारा के सहयोग से विकसित किए गए इस यन्त्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 माल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट अनुदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी. आर. काम्बोज ने बताया कि बेर जिमको शुष्क लेत्र के फलों का गाजा व गर्गंब का फल भी कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से उचित मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं जिससे लोगों में कुपोषणता की समस्या कम



कुलपति प्रो. वी. आर. काम्बोज के साथ डॉ. मुकेश कुमार व अन्य अधिकारीगण।

नवनियुक्त आई.ए.एस. डॉ. हरीश को किया सम्मानित

हिसार (ब्लॉग): डॉ. हरीश कुमार विश्वविद्यालय में साल 2001 से बतीर पशु चिकित्सक कार्यरत थे। डॉ. हरीश हाल ही में हरियाणा कैडर से आई.ए.एस. नियुक्त हुए हैं। इस अवसर पर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मंगली के प्रधानाचार्य और गांव के गणमान्य व्यक्तियों ने डॉ. हरीश का पण्डी पहनाकर सम्मान किया। कार्यक्रम में बिट्टू शर्मा ने मंच का संचालन किया व विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार खेले। इस अवसर पर योगेश रिंगु, डॉ. प्रदीप लाला, धर्मेश रिंगु, मनोराम, धर्मपाल, मल्हपाल दत्तात्रे, प्रभोद, संदीप, मुल्लान, प्रवीण, अनुप व गणकुमार आदि साथी कम्पचारी उपस्थित रहे।

होगी। परन्तु इस फल में गुठली होने की वजह से हम इसको छोटे बच्चों, इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में बुनियाँ व आपजन को देने में परेज करते हैं। लेकिन बेर की गुठली निकालने विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर अब तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अन्वरिक विश्वविद्यालय को 6 डिजिन पेटेंट, 11 कार्यक्रम और भी इसको आमानी से खा सकेंगे।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में बुनियाँ व आपजन को देने में परेज अब तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अन्वरिक विश्वविद्यालय को 6 डिजिन पेटेंट, 11 कार्यक्रम और भी इसको आमानी से खा सकेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
नॉन + डिस्ट्रिक्ट

दिनांक
18.12.22

पृष्ठ संख्या
३

कॉलम
1-3

बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को मिला पेटेंट !

हिसार, 17 दिसेंबर 2022

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हक्की) में विकासित बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राच्यापक डॉ. मुकेश कुमार छारा डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेन्द्र सिंह गोदारा के सहयोग से विकासित इस यंत्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए अनुदत्त किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बेर जिसको शुष्क क्षेत्र के फलों का राजा व गरीब का फल भी कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इस फल में गुठली होने की वजह से हम इसको छोटे बच्चों, बुजुर्गों व आमजन को देने में परेज़ करते हैं। बेर की

विश्वविद्यालय को मिल चुके हैं 20 पेटेंट

कुलपति ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकासित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर अब तक भिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

गुठली निकालने के बाद बच्चों को इसे दिना भय के खाने को दिया जा सकता है और बुजुर्ग भी इसको आसानी से खा सकते।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा गुठली निकालने के बाद प्रसंस्करण के लिए बेर का गृह भी आसानी से बनाया जा सकता है, जो विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के काम आ सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत सभाना/२	१८.१२.२२	५	५-७

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को मिला पेटेंट

हिसार, 17 दिसंबर (विरोद्ध वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राध्यापक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेन्द्र सिंह गोदार के सहयोग से विकसित किए गए इस यन्त्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट अनुदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह आनकारी देते हुए बताया कि बेर जिसको शुद्ध क्षेत्र के फलों का राजा व गरीब का फल भी कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से उचित मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं जिससे लोगों में कुपोषणता की समस्या कम होगी,



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ डॉ. मुकेश कुमार व अन्य अधिकारीगण।

परन्तु इस फल में गुठली होने की वजह से हम इसको छोटे बच्चों, बुजुर्गों व आमजन को देने में परेहज करते हैं। बच्चों में इसकी गुठली के खाने की नली में फसने का भय बना रहता है एवं बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दांत टूटने का खतरा रहता है। इनके अतिरिक्त खाले समय बेर की गुठली के साथ इसका गुहा भी चिपका रह जाता है जिससे इसमें उपस्थित प्रोषक, तत्व बेकार चलते जाते हैं। गुठली को मुंह से निकालकर बार-बार फेंकना भी एक समस्या है। उन्होंने कहा बेर की गुठली निकालने के बाद बच्चों को इसे बिना भय के खाने को दिया जा सकता है और बुजुर्ग भी इसको आसानी से खा सकेगी।

विश्वविद्यालय को मिल चुके हैं 20 पेटेंट; कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर अब

तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

प्रसंस्करण के लिए बहुत उपयुक्त है यन्त्र : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा गुठली निकालने के बाद प्रसंस्करण के लिए बेर का गुहा भी आसानी से बनाया जा सकता है जो विभिन्न प्रकार के ऊपाद बनाने के काम आ सकता है। इसके साथ ही इसकी कैडी व मुरब्बा बनाने के लिए फल में छेद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती जिससे इसकी अच्छी गुणवत्ता के साथ-साथ बहिर्या पैकिंग व परिवहन भी आसानी से किया जा सकता है। उन्होंने कहा इसकी प्रोसेसिंग की मांग बढ़ने से तुड़ाई के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सकेगा और किसानों वो इसके बचित भाव भी मिलेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैरेखी	18-12-22	9	1-6

विश्वविद्यालय को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेइट और एक ट्रेड मार्क भी मिल चुके

हकूमि में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को मिला पेटेंट

लिंगुनि ज्युज महिलाएँ

विश्वविद्यालय में विकसित वेतन के पक्ष से गुरुलाल निकालने के बायं को भारतीय पेटेट कार्यालय द्वारा पेटेट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सलमान प्राच्यापाक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा डॉ. देवी सिंह वडा राजेन्द्र सिंह गोदारा के पास से विकसित हो इस बायं को पेटेट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेट अनुदात किया गया है।

कलपति गे गिजावाए फायदे

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांडोज ने बताया कि बेर जिसको शुष्क संप्रे के फलों का राजा व गरीब का फल भी



हिंसा। कल्पनि प्री श्रीआर काम्होज के साथ हीं मधेश कमार या अन्य अधिकारी। एवं दूसरी

कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व
विटामिनों से रधरपूर फल है। इसके प्रयोग से
उचित मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं जिससे
लोगों में कुपोषणता की समस्या कम होगी।
परन्तु इस फल में गुरुली होने की वजह से

हम इसको छोटे बच्चों, बुजुर्गों व आपने की देने में पराहं रकत है। बच्चों में इसकी मुठली के खाने की नली में फसने का ध्य बना रहता है एवं बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दाँत टूटने का खतरा रहता है। इनके

विद्यविद्यालय का शिल्प

एक ही दृश्य

पुराणी पो खीजार कल्याणी ते बालांग कि
इन पेटेंट के उत्तर विषयवाचाम में दिक्षित
को नहीं विविध प्रौद्योगिकियों पर अब तक
सिल उत्कृष्ट पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 ढो बढ़े
हैं। इनके अधिकांश विषयवाचाम को 6
नवां एनपीटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड
मार्क जी प्रदान किय जा रहे हैं।

अतिरिक्त खाने से समय बेर की गुलाली के साथ
इसका गुदा भी चिपका रह जाता है जिससे
इसमें उपचारथत पोषक तत्व बैकर चले जाते
हैं। गुलाली को मुझ से निकालनकर बार-बार
फेंकना भी एक समस्या है। उन्होंने कहा वेर
की गुलाली निकालने के बाद बच्चों को इस
बिना भय के खाने को दिया जा सकता है
और बजर्ग भी इसका आसानी से खा सकेंगे।

**प्राणकरण के लिए बहुत
उपयोगी है कंत्र**

विश्वविद्यालय के अनुसंधान विभाग
में जीत राज शास्त्रों के कहा गुरुजी
विद्यालय के बाब प्रसारकरण के लिए
दूर या नज़ारे में आसानी से अचान्य जा-
नकारी की तरफ विभिन्न प्रकार के उपचार
बलात्कार की काम आ सकता है। इसका
संघर्ष ही फ़राही कीटों व गुरुज्ञा डग्गों
के लिए एक ने ऐसे करते थे यी
आवश्यकता नहीं पड़ती जिससे हमेही
अखण्ड गुणता के गाय रखा गांदिं
पैदेश्वरों व परिवहन भी आसानी से
किया जा सकता है। उच्छृंखले कहा
इसको प्रोत्साहन की मान बढ़ाने ते-
रुद्धर्ष के बाब होते वारे गुरुज्ञा को
कम किया जा सकता और किसी व्यक्ति
को इसके उत्तित गाय भी किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सन्धि कद	18.12.22	५	३-४

उपलब्धि

भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किया गया पेटेंट

एचएयू में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को मिला पेटेंट

खोज

हिसर (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के विभागानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राच्छापक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेन्द्र सिंह नोदार के सहयोग से विकसित किए गए इस यंत्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट अनुदत्त किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.



कुलपति प्रो. श्री.आर. कम्बोज के साथ डॉ. मुकेश कुमार व अन्य अधिकारीय।

देवी हुए बताया कि बेर जिसकी शुष्क क्षेत्र के फलों का राजा व गरीब का फल भी कहा जाता है, बहुत जारी पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से उचित मात्रा में पोषक तत्व मिलते

हैं जिससे लोगों में कृपेषणता और गमस्थि कम होती। परन्तु इस फल में गुठली होने की वजह से हम इसको छोटे बच्चों, बुजु़गी व अमरजन को देने में परेज करते हैं।

नली में फसने का भय बना रहता है एवं बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दोष दूटने का खतरा रहता है। इनके अतिरिक्त खाले समय बेर की गुठली के साथ इसका गुदा भी रिपका रह जाता है जिससे इसमें उपरियत

विश्वविद्यालय को मिल चुके 20 पेटेंट

कुलपति प्रो. श्री.आर. कम्बोज ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकासित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकीय पर अब तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 6 डिजिन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

प्रसंस्करण के लिए बहुत उपयुक्त यंत्र

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा गुठली निकालने के बाद प्रसंस्करण के लिए बेर का गुदा भी आसानी से बनाया जा सकता है जो विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के काम आ सकता है। इसके साथ ही इसकी केंद्री व मुख्य बनाने के लिए फल में छेद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उन्होंने कहा इसकी प्रोसेसिंग की मात्रा बढ़ाने से तुड़ाई के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता और किसानों को इसके उद्दित भाव भी मिलेंग।

पोषक तत्व बेकाए चले जाते हैं। गुठली को मुह से निकालकर बार-बार फेकना भी एक समस्या है। उन्होंने कहा बेर की गुठली आसानी से खा सकता है और बुजुर्ग भी इसके



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Times of India	18-12-22	3	4-5

Hry agri varsity's fruit destoner gets patent

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: The ber fruit destoner machine developed at Haryana Agricultural University (HAU) here has been granted a patent by the Indian Patent Office. The machine, developed by Dr Mukesh Kumar, assistant professor working in the department of horticulture, in collaboration with Dr Devi Singh and Dr Rajendra Singh Godara, has been given the patent for 20 years under the Patent Act.

Director, research, HAU Dr Jeet Ram Sharma said after removing the hard kernel, pulp of ber fruit could be easily processed and it can be used to make different types of products.

Along with this, there is no need to make holes in the fruit to make its candy and marmalade, due to which its good quality as well as good packaging and transportation can be done easily, he said, adding that by increasing the demand for the fruit's processing, post-

The machine, developed by Dr Mukesh Kumar, asst prof in horticulture dept has been given patent for 20 years under Patent Act

harvest losses would be reduced and farmers would also get fair prices.

Prof BR Kamboj, vice-chancellor of the university said ber, the king of fruits of dry region, also known as poor man's fruit, contains a lot of nutrients and vitamins, but due to the hard kernel, we refrain from giving it to small children and elders. That is why this device has been developed, he said. "With this patent, the number of patents granted so far to various technologies developed at the university has gone up to 20. In addition to these, the university has also been granted six design patents, 11 copyrights and one trademark," said the VC.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठ्यक्रम	17.12.2022	-----	-----

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को मिला पेटेंट



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ डॉ. मुकेश कुमार व अन्य अधिकारीगण।

पाठ्यक्रम चूज

हिसार, 17 दिसंबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राध्यापक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेन्द्र सिंह गोदारा के सहयोग से विकसित किए गए इस यन्त्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट अनुदात किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि बेर जिसको शुष्क क्षेत्र के फलों का राजा व गरीब का फल भी कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से

प्रसंस्करण के लिए बहुत उपयुक्त है यन्त्र

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा गुठली निकालने के बाद प्रसंस्करण के लिए बेर का गुदा भी आसानी से बनाया जा सकता है जो विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के काम आ सकता है। इसके साथ ही इसकी केंडी व मुरब्बा बनाने के लिए फल में छेद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती जिससे इसकी अच्छी गुणवत्ता के साथ-साथ बढ़िया पैकिंग व परिवहन भी आसानी से किया जा सकता है। उन्होंने कहा इसकी प्रोसेसिंग की मांग बढ़ने से तुड़ाई के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सकेगा और किसानों को इसके उचित भाव भी मिलेंगे।

विश्वविद्यालय को मिल चुके हैं 20 पेटेंट

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर अब तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेश्ट और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

जिससे लोगों में कृपोषणता की समस्या कम होगी। परन्तु इस फल में गुठली होने की वजह से हम इसको छाटे बच्चों, बुजुर्गों व आमजन को देने में परेहेज करते हैं। बच्चों में इसकी गुठली के खाने की नली में फसने का भय बना रहता है एवं बुजुर्ग लोगों के कमजोर दांत टूटने का खतरा रहता है। इनके अतिरिक्त खाते समय बेर की गुठली के साथ इसका गुदा भी चिपका रह जाता है जिससे इसमें उपस्थित पोषक तत्व बेकार चले जाते हैं। गुठली को मुंह से निकालकर बार-बार फेंकना भी एक समस्या है। उन्होंने कहा बेर की गुठली निकालने के बाद बच्चों को इसे बिना भय के खाने को दिया जा सकता है और बुजुर्ग भी इसको खाना-जी से खा सकेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समाचार पत्र	17.12.2022	-----	-----

एचएयू में विकसित किए बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को मिला पेटेंट

विश्वविद्यालय को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं

सिटी प्लॉज न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। कृषि महाविद्यालय के व्यावायिक विभाग में वार्षिक भाग्यवान् प्राच्छालिक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा देवी सिंह व डॉ. गणेश राम मोदारा के सहयोग से विकसित विषय पर इस कन्वन्य को पेटेंट अधिसंनिधन 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट अनुदाता किया गया है।

कुलपूति प्रौ. वी.आर. काल्योजे ने बताया कि बेर विस्तरे गुण वेर की गुठली के साथ इसका गुदा भी विषय हो जाता है औ इसमें इसमें उपस्थित पेटेंट तत्व बेकाम बनते जाते हैं। इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकसित की गई विभिन्न प्रैद्योगिकताओं पर अब तक



कुलपूति प्रौ. वी.आर. काल्योजे के साथ डॉ. मुकेश कुमार व अन्य अधिकारी।

इनके अतिरिक्त खाते समय बेर की गुठली के साथ इसका गुदा भी विषय हो जाता है औ इसमें इसमें उपस्थित पेटेंट तत्व बेकाम बनते जाते हैं। इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकसित की गई

मिल चके पेटेंटों की संख्या बहुकार 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. ज्येत राम शर्मा ने कहा

गुठली निकालने के बाद प्रसंस्करण की लिए बेर का गुदा भी आकर्षणीय बनता है जो विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के काम आ सकता है। इसके साथ ही इसकी कैटी व मुरब्बा बनाने के लिए फल में छेद करने की आवश्यकता नहीं

पड़ती जिससे इसकी अचूकी गुणवत्ता के साथ-साथ बहिर्भूत विकास भी आसानी से किया जा सकता है। उन्होंने कहा इसकी प्रोसेसिंग की मात्र बदलने से दुर्लभ के बाद ही बनते नुस्खान को कम किया जा सकता।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समृद्ध दृष्टिपाणी	17.12.2022	-----	-----

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुड़ी निकालने के यन्त्र को मिला पेटेंट

समस्त हरियाणा न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुड़ी निकालने के यन्त्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कौपी महाविद्यालय के वार्षिकी विभाग में कार्यालय सहायक प्राचारपक्ष डॉ. मुकेश कुमार द्वारा दूर्दृशी सिंह व डॉ. गोविंद सिंह गोदारा के सहयोग से विकसित किए गए इस यन्त्र को पेटेंट अधिकारियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 4038216 संख्या से पेटेंट अनुदात किया गया है। विश्वविद्यालय के मुख्यपति डॉ. वी.आर. कामरुल्लाह ने यह जानकारी देते हुए बताया कि येर विकसित गुड़ी के फलों का रस व गोदूँ का फल भी कहा जाता है, बहुत ज्यादे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से ड्रिंक्स बाज़ार में पोषक तत्व बिलहोत है विकसित लोगों में कृषीविज्ञान को महत्व कम होता। परन्तु इस फल में गुड़ी होने की वजह से हम इसके घोटे बच्चों, चुनुरों व आमजन को देने में परेंत्र करते हैं। अब्दी



में इसकी मुख्यता के लिए जो नली में फसाने का भय बना रहता है एवं चुनुरी लोगों के कमज़ोर दृष्टि द्वारा का खड़ा रहता है। इनके अंतिरिक खुलते यद्यपि येर की गुड़ी के साथ इसको गुड़ी भी विपक्ष का रह जाता है विकसित इसमें उत्तीर्ण पोषक तत्व बेकार चले जाते हैं। गुड़ी को मूँह से निकालकर बाट-बाट फेंकता भी एक समस्या है। उन्होंने कहा येर जो गुड़ी निकालने के बाद बच्चों जो इसे खिल भय के छाने की विधि वा

सकता है और चुनुरी भी इसको आमजन से खा सकते। गुड़ीकी प्रो. वी.आर. कामरुल्लाह ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकसित की गई विभिन्न वैज्ञानिकों पर अब तक मिल चुके पेटेंट की संख्या लगभग 20 हो गई है। उनके अंतिरिक विश्वविद्यालय को 6 डिवाइस पेटेंट, 11 कौरिलाइट और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किया जा चुके हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम लम्हा ने कहा गुड़ी निकालने के बाद प्रयोग्यता के लिए येर का गुड़ी भी आमजन से बढ़ाया जा सकता है जो विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने के काम आ सकता है। इसके साथ ही इसकी कैंटी व मूरबा बनाने के लिए फल में छेद करने की अवश्यकता नहीं पड़ती विकसित इसकी अच्छी गुणवत्ता के साथ-साथ योद्धा वैहस्कार व परिवहन भी आमजन से किया जा सकता है। उन्होंने कहा इसकी वैसेंसिंग की मांग बढ़ने से उद्धर्व के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता और विकसितों को इसके अधिक भाव भी दिलायी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाचार	18.12.2022	-----	-----

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को मिला पेटेंट

एव्वीन कुमार

हिंसा। ऐसे प्रयत्न की हारपट इन विश्वविद्यालयों में विस्तृत थे, के पास में पुस्ती निकासने के बब को पापीय मेंट चलाता इस घटने द्वारा विवरण दिया गया है। विश्वविद्यालयों के छात्रों यात्राविधि के बाबत संघर्षित करने का लकार सद्व्यवहार लगभग था। पुस्ती कुप्राप्ति थी औ देखे जाने वाली अपनी विश्व योगदान के सामरण्य से विश्वविद्यालय का इस बब को घटने अधिकारी 1970 के अप्रैल 20 बजाए आवाहन के द्वारा 408016 योगदान से घटें अनुमति दिया गया है। विश्वविद्यालयों की विश्व योगदान विभागत ते वह वास्तविकता देते हुए विवरण दिये गये विभिन्न घटने के पास से भी यह सामाजिक वापसी के बाबत यह विवरण दिया गया है। अतः यह विवरण दिया गया है।

प्रेस्ट तालीम विद्यालय में भर्ती पत्र है।
इसके प्राप्ति से उचित यहाँ में प्रश्न तथा
विचार है जिससे भीरा में कुप्रेक्षण की
समस्या कम होगी।

उसको आमनों से बचा रहकर।

प्रायोगिकता के लिए बहुत उपयुक्त है वह :
सिद्धीविद्यालय के अनुसार निम्नलिखि तरीके
द्वारा यहाँ के पांच दूसरी निवासों के लिए
प्रायोगिकता के लिए को कम से कम एक विद्यालय
का संबंध है जो विभिन्न विद्यालयों के
उपरांत विद्यालयों के बीच आ प्रवाह है। इसके
पास ही दूसरों के द्वारा उपयोग करने के लिए
विद्यालय में उत्तम विद्यालयों की अप्रयोगशाला नहीं पायी



प्रोटो-विलास भूमिका थी। ये विभिन्न कामकाज के मैदान थे। मुख्य कामकाज ये अन्य विवरण हैं।

जिससे इसको अच्छे पुरावाल के समझने में मद्दत होती है। यहाँ तक कि एवं अलगावों के बीच उसका असर भी नहीं रहता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समूच्छ प्रत का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हुली १८.१२.२०२२	18.12.2022	-----	-----

हकूमि में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को मिला पेटेंट

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यन्त्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राध्यापक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा

डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेन्द्र सिंह गोदारा के सहयोग से विकसित किए गए इस यन्त्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट अनुदात किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि बेर

जिसको शुष्क क्षेत्र के फलों का राजा व गरीब का फल भी कहा जाता है, बहुत सारे पोषक तत्वों व विटामिनों से भरपूर फल है। इसके प्रयोग से डिविट मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं जिससे लोगों में कृपोषणता की समस्या कम होगी। परन्तु इस फल में गुठली होने की वजह से हम इसको छोटे बच्चों, बुजुर्गों व आमजन को देने में परहेज करते हैं। बच्चों में इसकी गुठली के खाने की नली में फसने का भय बना रहता है एवं बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दांत टूटने का खतरा रहता है। इनके अतिरिक्त खाते समय बेर की गुठली के साथ इसका गुदा भी चिपका रह जाता

है जिससे इसमें उपस्थित पोषक तत्व बेकार चले जाते हैं। गुठली को मुंह से निकालकर बार-बार फेंकना भी एक समस्या है। उन्होंने कहा बेर की गुठली निकालने के बाद बच्चों को इसे बिना भय के खाने को दिया जा सकता है और बुजुर्ग भी इसको आसानी से खा सकेंगे।

कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विश्वविद्यालय में विकसित की गई विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर अब तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 6 डिजाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभूतजाता	18-12-22	1	1-5

उपलब्धि

एचएयू में विकसित यंत्र को 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट किया गया

बेर से गुठली निकालने के यंत्र को मिला पेटेंट

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कृषि विश्वविद्यालय में विकसित बेर के फल से गुठली निकालने के यंत्र को भारतीय पेटेंट कार्यालय ने पेटेंट प्रदान किया है। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के बागवानी विभाग में कार्यरत सहायक प्राच्यापक डॉ. मुकेश कुमार द्वारा डॉ. देवी सिंह व डॉ. राजेंद्र सिंह गोदारा के सहयोग से विकसित किए गए इस यंत्र को पेटेंट अधिनियम 1970 के तहत 20 साल की अवधि के लिए 408016 संख्या से पेटेंट किया गया है।

एचएयू कुलपति प्रो. कीआर कांबोज ने बताया कि बेर में गुठली होने की वजह से हम इसको छोटे बच्चों, बुजुर्गों व आमजन को देने में परहेज करते हैं। बच्चों में इसकी गुठली के खाने की जल्दी में फैसले का भय बना रहता है। बुजुर्ग लोगों के कमज़ोर दात दूटने का खतरा रहता है। इनके अतिरिक्त खाते समय बेर की गुठली के साथ इसका गुदा भी चिपका रह जाता है, जिससे इसमें उपीथत पाषक तत्व बेकार चलते



एचएयू कुलपति प्रो. कांबोज के साथ डॉ. मुकेश कुमार व अन्य अधिकारीगण पेटेंट पत्र दिखाते हुए।

जाते हैं। गुठली को मुह से निकालकर बार-बार फेंकना भी एक समस्या है। अब बच्चे और बुजुर्ग भी आमानी से बेर खा सकेंगे। कुलपति ने बताया कि इस पेटेंट के साथ विविध में विकसित की गई विधिन्यां प्रौद्योगिकी पर अब तक मिल चुके पेटेंटों की संख्या बढ़कर 20 हो गई है। इनके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को 6 डिज़ाइन पेटेंट, 11 कॉर्पोरेशन और एक ट्रेड मार्क भी प्रदान किए जा चुके हैं।

प्रसंस्करण के लिए बहुत उपयुक्त है यंत्र

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा कि गुठली निकालने के बाद प्रसंस्करण के लिए बेर का गुदा भी आमानी से बनाया जा सकता है, जिससे अच्छी गुणवत्ता की कड़ी व मुरब्बा भी बनाया जा सकता है।